हिन्दी

AsadalContents

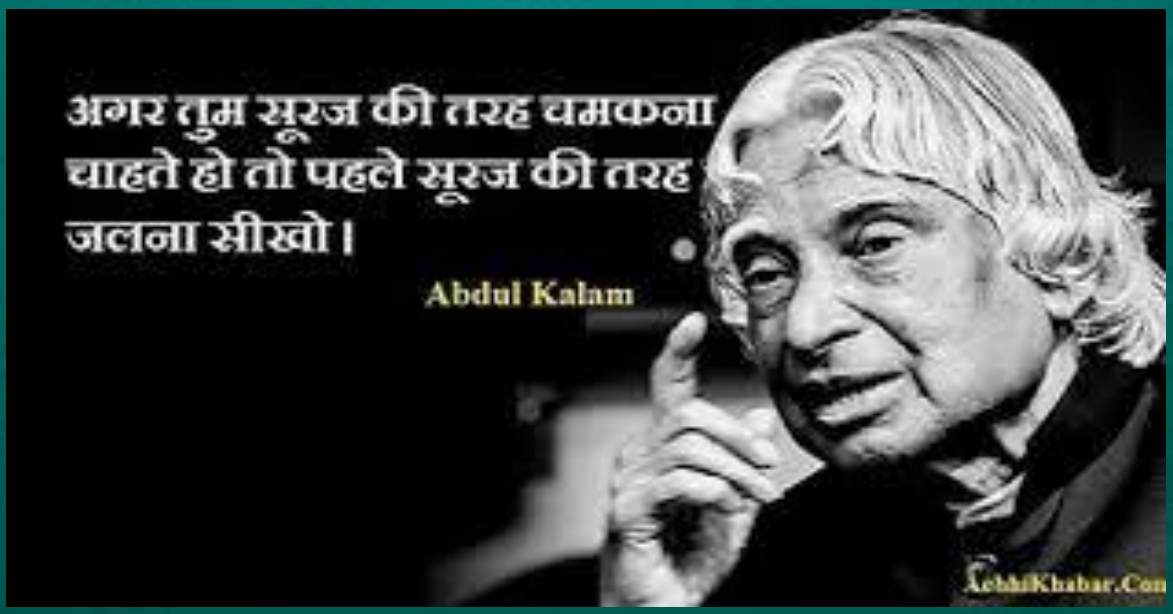

"भारत की विजय"

G20 का यह नारा है,

विश्व में प्रेम प्यार बढ़ाना है,

मोदी जी का यह मंत्र अब हम सबको अपनाना है,

एक है धरती एक है परिवार एक है भविष्य

पूरे विश्व को बतलाना है।

G-20 से अब बदलेगा विश्व सारा ,

विकसित होगा अब देश हमारा

हर घर होगा अब खुशहाल

लड़ाई झगड़ा नहीं होगा कहीं फिलहाल

चारों और प्रेम प्यार दिखेगा अब

ये संभव हुआ G-20 से सब

सिया अरोड़ा . **9 - अ**

शिक्षा

शिक्षा ही जीवन का आधार है।

शिक्षा दिलाती समाज में पहचान है।

शिक्षा से ही हमारा भूत, भविष्य, वर्तमान है।

शिक्षा हमें बनाती महान है।

शिक्षा वही है जो इंसान को इंसान बनाये।

शिक्षा बिना हमारा जीवन व्यर्थ है,

यही कटु सत्य है।

अशिक्षित को शिक्षा दो, अज्ञानी को ज्ञान,

शिक्षा से ही बन सकता है, भारत देश महान।

वैभव खांडे

ग्यारहवीं ए

स्वर्ग से बढ़कर है अपना परिवार

माता पिता से मिलकर
बनता है मेरा संसार
मेरे लिए तो स्वर्ग से बढ़कर
है अपना परिवार

दादी माँ से सुनी कहानी
क्या करते थे राजा रानी
कैसे लगते थे उनके दरबार
मेरे लिए तो स्वर्ग से बढ़कर
है अपना परिवार

मा-पापा की मैं प्यारी गुड़िया
मेरे लिए है सारी खुशियाँ
मैं मांगी जब एक खिलौना
वो लाए बाजार
मेरे लिए तो स्वर्ग से बढ़कर
है अपना परिवार

चाचा-चाची की शान हूँ मैं
भैया कहते अभिमान हूँ मैं
मुझको मिलता है हमेशा
सब लोगों का प्यार
मेरे लिए तो स्वर्ग से बढ़कर
है अपना परिवार

हिंदी पर कविता

मैं भारत मां के मस्तक पर सबसे चमकीली बिंदी हूं,
मैं सबकी जानी पहचानी भारत की भाषा हिंदी हूं।

मेरी बोली में मीरा ने मनमोहक काव्य सुनाया है,
कवि सूरदास के गीतों में मैंने कम मान न पाया है।

तुलसीकृत रामचरितमानस मेरे मुख में चरितार्थ हुई,
विद्वानों संतों की वाणी गुंजित हुई, साकार हुई।

सब भाषाओं के शब्दों को मैंने गले लगाया है,
इसलिए भारत के जन-जन ने मुझे अपनाया है।

सीधा-सादा रूप हीं मेरा सबके मन को भाता है,
भारत के जनमानस से मेरा सदियों पुराना नाता है।

मैं भारत मां के मस्तक पर सबसे चमकीली बिंदी हूं,
मैं सबकी जानी पहचानी भारत की भाषा हिंदी हूं।

संगीत जीवन में और जीवन संगीत में

संगीत सभी के जीवन में महान भूमिका निभाता है। यह हमें खाली समय में व्यस्त रखता है और हमारे जीवन को शांतिपूर्ण बनाता है। संगीत विभिन्न प्रकार का होता है, जिनका हम अपनी आवश्यकता और ज़रूरत के अनुसार आनंद ले सकते हैं हम में से कुछ लोग पढ़ाई करते हुए, कुछ इंडोर या आउट डोर खेल खेलते हुए और अन्य पलों पर संगीत सुनना पसंद करते हैं। फिर भी, सभी अपने खाली समय में आनंद और मस्तिष्क के आराम के लिए संगीत सुनना पसंद करते हैं। धीमी आवाज़ में संगीत सुनना हमें आराम और हमें मानसिक और भावनात्मक समस्याओं से जूझने में मदद करता है।

संगीत बहुत ही शक्तिशाली है जो भावनात्मक समय में हमें सकारात्मक संदेश पहुंचाता है और उससे परिचित करवाता है। संगीत योग की तरह होता है जो हमें खुश रखता है और हमारे शरीर में जो तनाव है उन्हें दूर करता है और शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रखता है। यही कारण है कि 21 जून को योग दिवस के साथ विश्व संगीत दिवस भी मनाया जाता है जिसका उद्देश्य

लोगों को संगीत के प्रति जागरूक करना है ताकि लोगों का विश्वास संगीत से न उठे । संगीत बहुत ही मधुर और कोमल होता है जो हमारे कानों में एक छाप छोड़ देता है विशेषतः वह संगीत का जो हमें बहुत ही प्यारा और अच्छा लगता है। जिस वजह से हमें वह संगीत गुनगुनाने को मजबूर करता है और कई बार हमें थिरकने को मजबूर भी करता है।

पलक ठाकुर ,9 - अ

तूफानों ने भी रोका बहुत

राहों में थे कांटे घने

पत्थर भी थे बहुत सारे

आँधी ने भी काटा रास्ता

तूफानो ने भी रोका बहुत

फिर भी कोशिश कर रहे थे उठने की

क्योंकि साहस था बढ जाने का

उम्मीद थी उन सुनहरी किरणों से

और ज़ज्बा था अपने बाहुबलो में

क्योंकि अपनी धरती माँ का कर्ज चुकाना था,

भारत देश का तिरंगा फहराना था,

अपना तिरंगा फहराना था ।

सिया अरोड़ा . 9 - अ

हार नहीं, तू लड़

क्या अभी से हार मान ली जाए? लड़ने से पहले, होगी पराजय क्या यह ठान लिया जाए ?

क्या भाग कर मुसीबत से हो पाओगे सफल?
देखो जरा...
अपनी काबिलियत को तुम अपने ही हाथों से कर रहे दफन

तू बेखौफ लड़, अच्छा होगा या होगा बुरा परिणाम ,
कर अपना उत्तम प्रदर्शन, फिर चाहे मिले या न मिले ईनाम।

जब जब धर्म को लगा सामने खड़ी उसके हार थी,
श्री कृष्ण बने सहायक, बने रथ के सारथि।

तू भी धैर्य रख न चुनौतियों से मुहं मोड़
किसी न किसी रूप में सहायक बनकर अवश्य आएंगे रणछोड़।

सामने दिख रही है हार दूर कहीं खड़ी है जीत
तू बस चलता रह, समझ प्रकृति की यह प्रीत ।।

यशस्वी , 10 अ

बाँट दिया इस धरती को

बाँट दिया इस धरती को

क्या चाँद सितारों का होगा

नदियों का कुछ नाम रखें

बहती धारो का क्या होगा

शिव की गंगा भी पानी है

आबे ज़मज़म पानी है

मुल्ला भी पिए पांडित भी पिए

पानी का मजहब क्या होगा

इन फिरका परस्तो से पूछो

क्या सूरज अलग बनाओगे

एक हवा में सांस है सबकी

क्या हवा भी नया चलाओगे

नस्लो का करे जो बांटवारा

रहबर वह कौम का ढोगी है

और क्या खुदा ने मंदिर तोडा था

या राम ने मस्जिद तोड़ी है।

अररद्रा मण्िल ,7 अ

समाज को आईना दिखाती

कहाँ पर बोलना है
और कहाँ पर बोल जाते हैं।
जहाँ खामोश रहना है
वहाँ मुँह खोल जाते हैं।

कटा जब शीश सैनिक का
तो हम खामोश रहते हैं।
कटा एक सीन पिक्चर का
तो सारे बोल जाते हैं।
नयी नस्लों के ये बच्चे..

जमाने भर की सुनते हैं।
मगर माँ बाप कुछ बोले
तो बच्चे बोल जाते हैं।
बहुत ऊँची दुकानों में
कटाते जेब सब अपनी।

मगर मज़दूर माँगे
तो सिक्के बोल जाते हैं।
अगर मखमल करे गलती..
तो कोई कुछ नहीं कहता।
फटी चादर की गलती हो
तो सारे मुँह खोल जाते हैं।

शुभी सिंह
सातवीं (स)

कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती

कोशिश करने वालों की हार नहीं होती,
लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती।
नन्ही चींटी जब दाना लेकर चलती है,
चढ़ती दीवारों पर सौ बार फिसलती है।

मन का विश्वास रगों में साहस भरता है,
चढ़कर गिरना,गिरकर चढ़ना ना अखरता।
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती,
कोशिश करने वालों हार नहीं होती।

डबकियां सिंधु में गोताखोर लगातार है,
जा जाकर खाली हाथ लौट आता है।
मिलते नहीं सहज ही मोंती गहरे पानी में,
बढ़ता दुगुना उत्साह इसी हैरानी में।

मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।
असफलता एक चुनौती है इसे स्वीकार करो,
क्या कमी रहे गयी देखो और सुधार करो।

जब तक न सफल हो नींद, चैन से त्यागो तुम,
संघर्ष का मैदान छोड़कर मत भागो तुम।
कुछ किए बिना ही जय जयकार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।

लक्ष्मी ,सातवीं अ

संकलन(कविता हरिवंशराय बच्चन)

हिन्दी भाषा

प्रकृति की पहली ध्वनि ॐ है
मेरी हिंदी भाषा भी , इसी ॐ की देन है।
देवनागरी लिपि है इसकी , देवों की कलम से उपजी
बांगला ,गुजराती ,भोजपुरी डोगरी ,पंजाबी और कई
हिंदी ही है इन सब की जननी।

प्रकृति की हर इक चीज अपने में संपूर्ण है

मेरी हिंदी भाषा भी अपने में संपूर्ण है

जो बोलते हैं वही लिखते हैं,

मन के भाव सही उभरते हैं।

हिंदी भाषा ही तुम्हें ,प्रकृति के समीप ले जाएगी,

मन की शुद्धि तन की शुद्धि , सहायक यह बन जाएगा।

कुछ हवा चली है ऐसी यहां

कहते हैं इस मातृभाषा को बदल डालो।

बदल सको क्या तुम अपनी माता को ?

मातृभाषा का क्यों बदलाव करो।

देवो की भाषा का क्यों तुम तिरस्कार करो ।

बदल सको तो तुम अपनी सोच को बदल डालो ।

हर एक भाषा का तुम दिल से सम्मान करो

अक्षिता ठाकुर ,सातवी 'स'

प्रेरणादायक विचार

"जरा सी कामयाबी को हवाओं में मत उड़ाना,

क्योंकि तुम्हें नहीं पता इस रोशनी की चमक कितनी देर तक रहती है।"

"शोर मचाओगे तो मेहनत भी साथ नहीं देगी, ये पसीना भी पानी बनकर बह जाएगा,

बिना कामयाबी का स्वाद चखे, हाथ भी खाली रह जाएगा।"

"कभी हौसला नीचे गिरे या पैर डगमगाएँ

उस वक्त अपने आप को जोर से पकड़ना और खुद को ये तसल्ली देना,

ये मज़ाक नहीं है वास्तविकता है जिसको मैंने सिर्फ चलकर पार करना है।"

"सिर्फ लोगों की सुनोगे तो जहाँ खड़े हो वहीं खड़े रह जाओगे,

तुम्हें अगर उड़ना है तो तुम्हारे कानों में सिर्फ तुम्हारी आवाज़ गूँजनी चाहिए।"

"लक्ष्य को अगर ठान लिया जाए तो फिर मुश्किलों से डर नहीं लगता,

ये कदम लड़खड़ाते जरूर है, पर आगे बढ़ने से डर नहीं लगता ।"

आदित्य, तीसरी 'ब'

शिक्षक

जीवन में जो राह दिखाएं
सही तरह चलना सिखाए
मात-पिता से पहले आता
जीवन में सदा आदर पता

सबको मान प्रतिष्ठा जिससे
सखी कर्तव्यनिष्ठा जिसने
कभी रही ना दूर मैं जिससे
वह मेरा प्रथदर्शक है जो
मेरे मन को भाता
वह मेरा शिक्षक कहलाता है

कभी है शाम कभी है धीर
स्वभाव है सदा गंभीर
मन में दबी रहे यह इच्छा
काश मैं उसे जैसा बन पाता
जो मेरा शिक्षक कहलाता

धन्यवाद

प्रिशा .सातवीं अ

झूलम-झूली

माटी-माटी खेलें,

आओ, पानी-पानी खेलें;

धरती में बीजों को बोएँ,

खेल किसानी खेलें।

छुप्पम-छुप्पी खेलें,

आओ, झूलम-झूली खेलें;

चढ़ें पेड़ पर पकड़म-पकड़ी,

कूदम-कूदी खेलें।

योगिता ,सातवीं "स"

मेरा साहस

मेरा साहस , मेरी इज्ज़त , मेरा सम्मान है पिता|

मेरी ताकत मेरी पहचान है पिता||

घर की एक-एक ईट में शामिल उनका खून-पसीना|

सारे घर की रौनक उनसे सारे घर की शान है पिता|

मुझको हिम्मत देने वाले

मेरा अभिमान है पिता|

सारे रिश्ते उनके दम से

सारी बाते उनसे है

सारे घर की दिल की धडकन

सारे घर की जान है पिता|

शायद रब ने देकर भेजा फल ये अच्छे कर्म का|

उसकी रहमत

उसका है वरदान पिता |

अररद्रा ,7 अ

मर्यादा पुरुषोत्तम् श्री राम

श्री राम का जन्म चैत्र माह की नवमी के दिन अयोध्या में हुआ था। उनके पिता अयोध्या के राजा दशरथ थे और उनकी माता का नाम कौशल्या था। वह चार भाई थे।वह ज्येष्ठ पुत्र थे| वह अपने मानवीय गुणों के कारण पिता के सबसे प्रिय पुत्र थे। राम में कई अन्य गुण थे जैसे विवेकशील , शालीन और न्यायप्रिय । वे अपने पिता की आज्ञा अनुसार चौदह वर्ष के लिए वनवास गए थे। उन्हें बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था। जब रावण ने सीता का हरण किया था तब उनकी सहायता सुग्रीव और हनुमान जी ने की थी। वानरसेना ने बहुत बहादुरी से राक्षसों का सामना किया था। उन्होंने आखिर में रावण का वध कर सीता को बचा लिया। फिर चौदह वर्ष पूरे होने के बाद राम अयोध्या पहुँचे, सब की खुशी का ठिकाना नहीं था उनका स्वागत किया गया और अगले दिन उनका राज्याभिषेक हुआ। उन्होंने कई वर्षों तक अयोध्या पर राज किया, उनके राज में किसी को कोई कष्ट नहीं था। भेदभाव नहीं था। कोई बीमार नहीं था। खेत हरे भरे थे। पेड़ फलों से लदे थे। राम अपने पिता की तरह न्यायप्रिय थे। गुणों के सागर थे, उनका राज्य राम राज्य था जो आज तक स्मृतियों में हैं।

समय का महत्त्व

सतय मूल्यवान हैं। इसका कोई मूल्य नहीं हैं। जो समय चला जाता हैं वह कभी वापस नहीं आता हम मनुष्य, समय का बहुत अधिक अनुचित उपयोग करते हैं। अगर हम समय का अच्छी तरह से उपयोग करें तो हमारा भविष्य उज्ज्वल है। विद्यार्थी जीवन के लिए समय का बहुत अधिक महत्व है | समय उनके लिए अनमोल है | यदि विद्यार्थी समय के सदुपयोग को गम्भीरतापूर्वक न ले तो उसक भविष्य खतरे मे पद सकता है । समय को कोई खरीद नहीं सकता है । यह सबके लिए धन से भी ज्यादा मूल्यवान है| संसार में मूल्यवान समय को बरबाद करने के बाद व्यक्ति के पास पछतावे के अलावा कुछ नहीं बचता। विद्यार्थी जीवन का उद्देश्य शिक्षा प्राप्त करना है| शिक्षा प्राप्ति के लिए समय का आदर करना आवश्यक है

दिविजा सिसोदिया, छठी ब

परीक्षा पे चर्चा एक अंतर्दृष्टि

हर साल, भारत में शैक्षिक परिदृश्य एक अद्वितीय और प्रभावशाली कार्यक्रम का गवाह बनता है जिसे "परीक्षा पे चर्चा" के नाम से जाना जाता है, एक बातचीत शुरू हुई प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा देश भर के छात्रों, अभिभावकों और शिक्षकों के साथ। यह इंटरैक्टिव सत्र परीक्षा से संबंधित चुनौतियों और चिंताओं पर चर्चा करता है।

यह कार्यक्रम अक्सर परीक्षा में होने वाले तनाव और चिंता को संबोधित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। प्रधानमंत्री प्रतिभागियों के साथ खुले संवाद में शामिल होते हैं, उपाख्यानों, कहानियों और व्यावहारिक युक्तियों को साझा करते हैं ताकि विद्यार्थियों को आत्मविश्वास और सकारात्मक मानसिकता के साथ परीक्षा यात्रा में मदद मिल सके।

एक छात्र की शैक्षणिक यात्रा में माता-पिता की भूमिका को स्वीकार करते हुए, "परीक्षा पे चर्चा" माता-पिता और बच्चों के बीच खुले संचार को प्रोत्साहित करती है। यह कार्यक्रम घर पर एक सहायक वातावरण की आवश्यकता पर जोर देता है, जहाँ छात्र अपनी चिंताओं और आकांक्षाओं को व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित महसूस करते हैं।

"परीक्षा पे चर्चा" छात्रों के लिए प्रेरणा का एक प्रतीक है, जो उनमें आत्म-विश्वास और लचीलेपन की भावना पैदा करता है। जैसे-जैसे भारत परीक्षाओं के प्रति अपने दृष्टिकोण में विकास कर रहा है वैसे-वैसे परीक्षा पे चर्चा" एक आधारशिल कार्यक्रम बनता जा रहा है, जो छात्रों और शिक्षकों की मानसिकता को समान रूप से आकार दे रहा है। उनमें कार्य क्षमता और चिंतन को बढ़ने के साथ साथ जागरूकता भी पैदा करता है|

नाम – अनुराग , 9ब

हाय! रे परीक्षा

जिस नाम को सुनते ही काँपता है हर बच्चा,
वो है परीक्षा
परीक्षा का पेपर हाथ में आते ही,
इतना डर लगता है कि अच्छा नहीं किया,
तो घर में पिटना पक्का है
3 घंटे में करने होते है सब सवाल,
एक भी छूटा,तो घर में होगा बवाल !
रिजल्ट के एक दिन पहले, रात को नीद नहीं आती है,
अच्छे अंक पाने को भगवान की याद आती है ।
रखते है विद्यार्थी भगवान का व्रत, अगर फेल हुए तो लगता है होगा,
"डंडे से नृत्य .....
पास होने पर मिलती नहीं प्रशंसा,
फिर आती है अगली कक्षा, तब भी मन में रहता है,
"हार! रे परीक्षा"।

मोदी जी की 'परीक्षा पे चर्चा' ने
मन का भार कुछ कम किया,
अभिभावक और बच्चे का मेल कराया...
बच्चे को बस पढ़ने दो,
दूसरों से न तुलना करो,
उसका ध्यान रखो पर रोकटोक न करो,
अध्यापक दिशा दिखाएंगें तो
बच्चे मेहनत कर पायेंगें ....
जीवन की इस परीक्षा में
आत्मविश्वास से भरकर परीक्षा दे पाएंगें !
सब का साथ मिलेंगा तो
परीक्षा का डर खत्म होगा ....
आगे सब बढ़ पाएंगे .....
हाय ! रे परीक्षा भूल जाएंगे |

अनीशा सरकार

परीक्षा और विद्यार्थी

क्यों है इन परीक्षाओं का आना, क्यों है इन्हें बच्चों को सताना ?
उनसे उनकी मस्ती छीनकर, उन्हें तनाव से भर जाना ?
प्रश्नों से डरना, हडबडाना, सब था पढ़ा फिर भी घबराना |
व्याकुलता से गलती करता, और अफसोस में चिंता बढ़ाना।

इस डर के अंधकार में रोशनी करती किरण दिखी,
परीक्षा पे चर्चा से मन में आशा की ज्योति जली।
अपने अनुभवों से राह दिखाकर मोदीजी ने समाधान किया।
और सफलता के मंत्र बताकर छात्रों को प्रोत्साहित किया ।

मोदी के शब्दों से बच्चों का मार्ग प्रशस्त हुआ,
और परीक्षा के लिए जैसे उन्हें आश्वस्त किया ।
परीक्षाओं को भी खुशी से, त्योहारों सा मनाना है,
फिर तनाव रहित रहकर मेहनत से सफलता को पाना है ।

मोदी जी ने हमें सिखाया डर को दूर भगाना है,
प्रतिस्पर्धा को नहीं, अनुस्पर्धा को बढ़ाना है।
समय यह हमारा है इसका सदुपयोग करना है,
शिक्षा है ईश्वर का उपहार,
इससे भविष्य को उज्ज्वल करना है।

सुरभि सिंह
नवीं 'ब'

परीक्षा पे चर्चा

पीएम की बड़ी बातें :

पीएम मोदी ने अपने संबोधन के दौरान कहा कि प्रतिस्पर्धा और चुनौतियां जीवन में प्रेरणा का काम करती हैं, लेकिन प्रतिस्पर्धा स्वस्थ होनी चाहिए.

पीएम नरेंद्र मोदी ने कहा कि टीचर्स को बच्चों से घुलना मिलना चाहिए. क्लास में सहज माहौल बनाना चाहिए, जिससे बच्चे आपके विषय में रूचि लेकर अपनी जिज्ञासा को शांत कर सकें |

उन्होंने कहा कि हमें आदत डालनी चाहिए कि हम निर्णायक बनें. अनिर्णायकता बहुत खराब होती है. हमारी क्षमता को बाहर नहीं आने देती |

उन्होंने लिखने की प्रक्टिस करने पर बल दिया, जिनता लिखेंगे उतनी स्पीड आएगी और गलतियां समझ में आएंगी और सुधार की उम्मीद बढ़ जाएगी |

रौनक, 9

भारत की गुलामी से आजादी की कहानी

मैं आपको गुलामी से, आजादी की कहानी सुनाती हूं।
आजादी के मतवालो की गौरव गाथा बतलाती हूं।

लगभग 400 साल पहले छल करने वाले, छल करने आये।
बिजनैस की आड़ में, अपने बुरे मनसूबे छुपाकर लाये।

अतिथि देवो भव: की हमारी भावना का, गलत फायदा उठाया।
हमारे रहनुमाओ का दिल जीतकर, उनको अपने जाल में फ़साया।

जो ना फंस सके जाल में, उनको उनके ही शागिर्दो से, लालच देकर मरवाया।
फूट डालो और राज करो की नीति से, हमको गुलाम बनाया।

अत्याचारो की सारी सीमाएं तोड़ डाली।
और सोने की चिड़िया को, लूट – लूट कर कंगाल बनाया।

मनीषियों की धरती का, अवचेतन मानुष फिर जाग गया।
मंगलपांडे बना जनक, 1857 के विद्रोह का, जो पहला स्वतंत्रता संग्राम कहलाया।

मंगलपांडे की शहादत ने, आजादी के मतवालो की लाईन लगा दी।
1857 की फूटी चिंगारी ने, फ़िरगिंयों के मंसूबों में आग लगा दी।

आजादी के नन्हें दीवाने भी, हंसते हंसते सूली पर झूल गये।
वे आजादी के ऐसे मतवाले थे, जो मरकर भी अमर रहे।

मेरे 'बोस' ने तो अग्रेजो को धूल चटा दी।
उनके सामने ही, आजाद हिंद फौज बना दी।

आखिरकार आजादी के दीवानो ने, आम जनता में ज्ञान की जोत जला दी।
उठ खड़ा हुआ जन सैलाब, सभी ने आजादी की मशाल उठा ली।।

साबरमती के संत ने तो कर दिया कमाल।
दे दी हमें आजादी, बिना खड्ग बिना ढ़ाल।

गुलामी से, आजादी की यह कहानी सुनाती हूं।
आजादी के मतवालो की यह गौरव गाथा बतलाती है।

अस्मिता शर्मा ,छठी 'स'

हार मान ली जाए ?

क्या अभी से हार मान ली जाए ?

लडने से पहले, होगी पराजय , क्या यह ठान लिया जाए ?

क्या भाग कर मुसीबतों से हो पाओगे सफल ?

देखो जरा, अपनी काबिलियत अपने ही हाथों से कर रहे दफ़न ।

तू बेखौफ लड़, अच्छा होगा या होगा बुरा परिणाम,

कर अपना उत्तम प्रदर्शन, फिर चाहे मिले या न मिले इनाम ।

जब जब धर्म को लगा सामने खड़ी उसके हार थी,

श्री कृष्ण बने सहायक, बने रथ के सारथी ।

तू भी धैर्य रख, न चुनौतियों से मुँह मोड़,

किसी न किसी रूप में सहायक बनकर अवश्य आएँगे रणछोड ।

सामने दिख रही है हार, दूर कंही खडी है जीत,

तू बस चलता रह, समझ प्रकृति की यह प्रीत।।

यशस्वी शर्मा ,दसवीं अ

प्रेरणा

उठो चलो नए सवेरे की ओर मिलेगा सफलता का हर कदम |
हार जीत तो जीवन का हिस्सा है । रुको नहीं बढ़ते चलो ।

हम सब कुछ ना कुछ कर सकते हैं लेकिन डरना नहीं है बस चलते रहना है।

कर्म करो सफलता की चिंता ना करो अगर कर्म करोगे तो सफलता आपके पास आएगी सफलता आपके पास आएगी।

हर दिन नया है हर दिन कुछ सीखने के लिए है।
समय की कीमत समझो और कर्म करो समय निकल जाएगा आप पीछे रह जाओगे।

अपने सपनों को देखो उनकी और बड़ों हिम्मत हो तो कुछ भी हो सकता है बस यकीन रखो।

मुश्किलों का सामना करो हौसला बनाए रखो
रास्ते में थोड़ी सी चुनौतियां जीवन को रोचक बना देती है।

मंजिल की तलाश में जारी रखो कदम हर कदम
पर ताकत मिलेगी जीवन का सफर है कुछ खास।

अपने अंदर की आग जगाओ मोहब्बत से जीना सीखो
हर दर्द को हंसी में बदलो।

प्रिशा उनियाल ,7वीं 'ब'

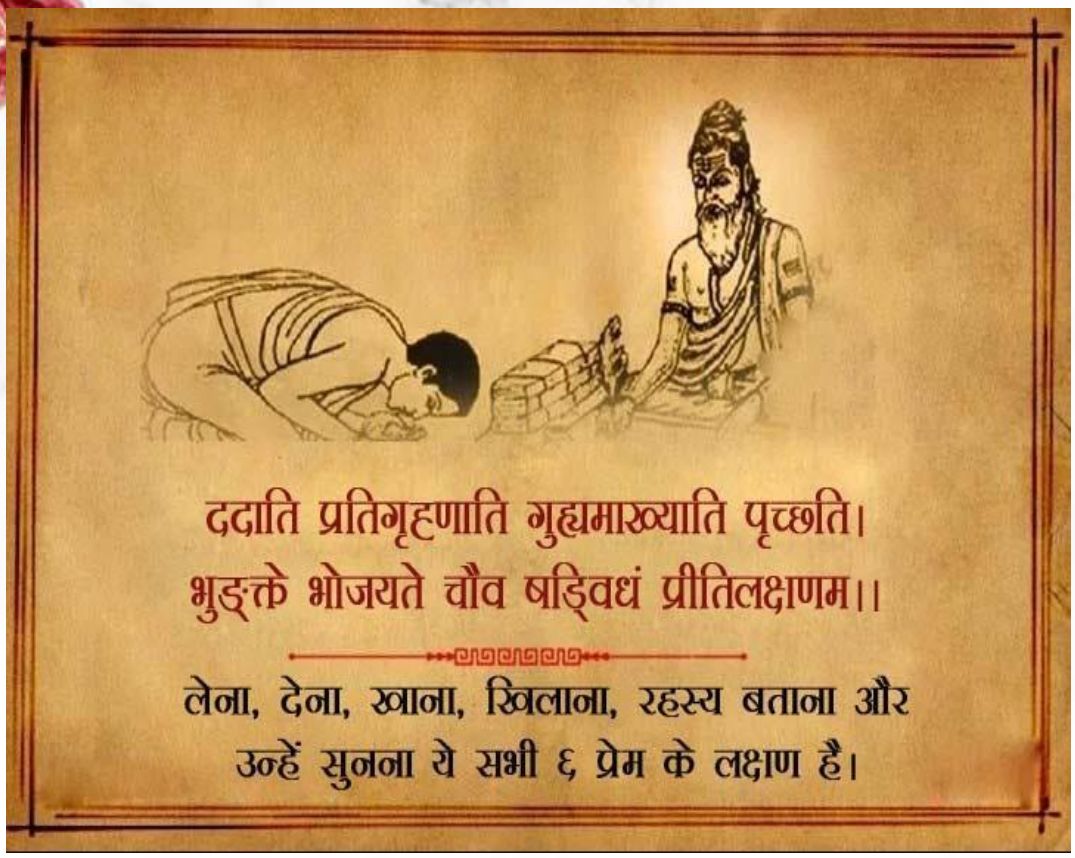
ददाति प्रतिगृह्णाति गुह्यमाख्याति पृच्छति।
भुङ्क्ते भोजयते चौव षड्विधं प्रीतिलक्षणम।।
लेना, देना, खाना, खिलाना, रहस्य बताना और
उन्हें सुनना ये सभी ६ प्रेम के लक्षण है।

संस्कृत

संस्कृत श्लोक

“योगस्थः कुरु कर्माणि संगं त्यक्त्वा धनंजय ।

सिद्धयसिद्धयोः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते ॥”

अर्थ – इस श्लोक में भगवान श्री कृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि हे धनंजय!

तू आसक्ति को त्यागकर, सफलताओं और विफलताओं में समान भाव

लेकर सारे कर्मों को कर। ऐसी समता ही योग कहलाती है।

“उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।

क्षुरासन्नधारा निशिता दुरत्यदद्दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति॥”

अर्थ - उठो, जागो, और अपने लक्ष्य को प्राप्त करो। तेरे रास्ते कठिन हैं,

और वे अत्यन्त दुर्गम भी हो सकते हैं, लेकिन विद्वानों का कहना हैं कि कठिन

रास्तों पर चलकर ही सफलता प्राप्त होती है।